गुरु नानक – सबद ४२
मोती त मंदर ऊसरहि रतनी त होहि जड़ाउ ॥
रागु सिरिरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, १४

मोती त मंदर ऊसरहि रतनी त होहि जड़ाउ ॥
कसतूरि कुंगू अगरि चंदनि लीपि आवै चाउ ॥
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥१॥
हरि बिनु जीउ जलि बलि जाउ ॥
मै आपणा गुरु पूछि देखिआ अवरु नाही थाउ ॥१॥ रहाउ ॥
धरती त हीरे लाल जड़ती पलघि लाल जड़ाउ ॥
मोहणी मुखि मणी सोहै करे रंगि पसाउ ॥
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥२॥
सिधु होवा सिधि लाई रिधि आखा आउ ॥
गुपतु परगटु होइ बैसा लोकु राखै भाउ ॥
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥३॥
सुलतानु होवा मेलि लसकर तखति राखा पाउ ॥
हुकमु हासलु करी बैठा नानका सभ वाउ ॥
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥४॥१॥

सार: रत्न कच्चे रूप में साधारण पत्थर जैसे लगते हैं लेकिन जब उन्हें काटा-तराशा जाता है तब उनकी चमक और ख़ूबसूरती उन्हें अत्यधिक मूल्यवान बना देती है। इसी तरह प्रकृति के तत्व रोज़मर्रा की ज़िंदगी में मामूली लग सकते हैं लेकिन उनका असली मूल्य तब उजागर होता है जब हम उन्हें आत्म-चिंतन के माध्यम से ज्ञान और जीविका के महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में पहचानते हैं। यह समझ हमें समृद्ध करती है और यह जानने में मदद करती है कि प्रकृति का हर हिस्सा हमारी ज़िंदगी को ख़ास तौर से संवारता है।

मोती त मंदर ऊसरहि रतनी त होहि जड़ाउ ॥
मोतियों से सुशोभित और कीमती रत्नों से जड़ा एक निवास स्थान हो।

कसतूरि कुंगू अगरि चंदनि लीपि आवै चाउ ॥
अगर इसे कस्तूरी, केसर, इत्र से सुगंधित किया जाए और चंदन से अभिषेक किया जाये।

मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥१॥
इन भ्रामक आकर्षणों से लुभाए जाने से सावधान रहें क्योंकि यह सच्चे आत्म-चिंतन से भटका सकते हैं। (१)

हरि बिनु जीउ जलि बलि जाउ ॥
एकता के मार्ग को न अपनाने से दिल में सकारात्मकता ख़त्म हो जाती है।

मै आपणा गुरु पूछि देखिआ अवरु नाही थाउ ॥१॥ रहाउ ॥
मैंने मार्गदर्शन के लिए ज्ञान के स्रोतों की ओर रुख किया क्योंकि वही मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते हैं। (१)(विराम)

धरती त हीरे लाल जड़ती पलघि लाल जड़ाउ ॥
यदि धरती रत्नों से जड़ी हो और बिस्तर कीमती रत्नों से सुशोभित हो

मोहणी मुखि मणी सोहै करे रंगि पसाउ ॥
और शारीरिक सुंदरता भी आभूषणों से सजी और मोहक हो।

मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥२॥
इन भ्रामक आकर्षणों से लुभाए जाने से सावधान रहें क्योंकि यह सच्चे आत्म-चिंतन से भटका सकते हैं। (२)

सिधु होवा सिधि लाई रिधि आखा आउ ॥
यदि अलौकिक ज्ञान प्राप्त हो, चमत्कार करने और भौतिक धन बनाने की शक्तियाँ मिलें।

गुपतु परगटु होइ बैसा लोकु राखै भाउ ॥
यदि कोई इच्छानुसार अदृश्य और दृश्यमान हो और लोग इससे प्रभावित होकर सम्मान करने लगें।

मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥३॥
इन भ्रामक आकर्षणों से लुभाए जाने से सावधान रहें क्योंकि यह सच्चे आत्म-चिंतन से भटका सकते हैं। (३)

सुलतानु होवा मेलि लसकर तखति राखा पाउ ॥
अगर कोई विशाल सेना का राजा हो और सिंहासन पर पांव रखे।

हुकमु हासलु करी बैठा नानका सभ वाउ ॥
उसके पास आदेश देने और बड़ा राजस्व इकट्ठा करने की ताक़त हो तब भी, नानक कहते हैं कि ये सभी स्थितियाँ हवा के झोंके की तरह अस्थायी हैं।

मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥४॥१॥
इन भ्रामक आकर्षणों से लुभाए जाने से सावधान रहें क्योंकि यह सच्चे आत्म-चिंतन से भटका सकते हैं। (४)(१)

तत्त्व: गुरु नानक हमें स्मरण कराते हैं कि सांसारिक उपलब्धियाँ अस्थायी, क्षणभंगुर हैं और बाहरी परिस्थितियों पर हमारी ख़ुशियाँ निर्भर करती हैं। इसके विपरीत, सच्ची संतुष्टि आंतरिक चिंतन से आती है जो गहराई और स्थायित्व देते हैं जो बाहरी लाभ नहीं दे सकते। वह हमें भटकाने वाली इच्छाओं के आकर्षण से बचने और सच्चे संतोष की ओर बढ़ने की सलाह देते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com